શ્રી જગદીશ્વર પ્રસન્ન

# ઈશ્વરોપાસના.

આ પુસ્તક

અમદાવાદ પ્રાર્થનાસમાજે

પ્રગટ કર્યું.

સત્યમેવ જયતે.


અમદાવાદ મધ્યે

મસાની હવેલીમાં અ. યુનાઈટેડ પ્રીંટીંગ

અને જ. એ. કં. લિમિટેડના પ્રેસમાં

રણછોડલાલ ગંગારામે છાપી.

સંવત ૧૯૩૬.

મૂલ્ય ૬ આના.

## सूचना.

आ सृष्टिनां कर्ता नियंता अने पालन करनार परमेश्वरनी उपासना करवी ए मनुष्यनुं मुख्य कर्तव्य छे.

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसं विशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्म (तै- त्तिरीयोपनिषद् ३—१)

जेनाथी आ सर्व जगत् तथा प्राणिमात्र उत्पन्न थयुंछे, जेनावडे ते सर्व जीवेछे, अने अंते जेमां सर्व लय पामेछे, तेने जाणवानी इच्छा कर.

मननी वासना अयोग्य विषय उपर न जतां कर्तव्य ज्ञान तथा धर्म बुद्धि स्थिर र-

है एने वास्ते ईश्वरनी उपासना ए मुख्य साधन छे; माटे सत्य स्वरूप परमात्मानी उपासना वडे दिवसे दिवसे आत्माने पवित्र अने शुद्ध करवो.

ए सर्व साक्षी परमेश्वर सर्वदा आपणा सन्निध रहेछे ए ध्यानमां राखी तेनी शान्त मनथी उपासना करवी.

शान्तोदान्तउपरतस्तितिक्षुःसमाहितोभूत्वाऽऽत्मन्येवात्मानंपश्यति.

“शान्त” इन्द्रियलौल्यात्प्रशान्तः “दान्तः” युक्तमनाः “उपरतः” विनिर्मुक्तः “तितिक्षुः” द्वंदसहिष्णुः एकाग्ररूपेणसमाहितोः भूत्वाऽऽत्मनिजीवात्मनिएवपरमात्मानं स्वयंभुवंपश्यतिब्रह्मवित्,

इंद्रियोनी ललुताथी मनने पाछुं हठावी शा-
न्त रहीने मनने स्थिर राखीने बीजां क-
र्मथी विमुक्त थइने सुखदु:खादि सहन क-
रीने एकाग्र चित्ते स्वस्थ थइने जीवात्माने
विषे स्वयंभू परमात्माने ब्रह्म जाणनार सा-
क्षात् ध्यानमां लावेछे एटले पोताना आ-
त्मामां परमात्माना मंगलज्योतिना प्रकाशनुं
दर्शन करेछे.

उपासना एटले बाह्यारना पदार्थो उपर-
थी मनने खशेडीने ईश्वरना समीपमां ले-
इ जवुं.

उपासनानां पांच अंग छे. स्तवन, भजन,
कृतज्ञता, आराधना अने प्रार्थना.

ईश्वरनी अपार शक्ति, महिमा अने कृपानुं
वर्णन ए स्तवन.

ईश्वरना सत्य नित्य अने मंगल गुणनो
विचार करवाथी मनमां अनन्य भावथी ई-

श्वर उपर पूज्यबुद्धि तथा प्रीति उत्पन्न थाय तेनुं प्रदर्शन ए भजन.

आपणा उपर ईश्वरनी जे अनुपम तथा अपार कृपा छे तेना स्मरणपूर्वक धन्यवाद करवा ए कृतज्ञता.

आपणा हृदयमां ए पवित्र सत्यस्वरूप मंगलमय परमात्मानुं दर्शन लेइने तेने प्रेम पूर्वक आपणो आत्मा समर्पण करवो एटले आत्मानी ईश्वर साथे संलग्नता राखवी, अर्थात् उपासना करतीं वेळा केवल ईश्वर उपरज लक्ष राखवो ए आराधना.

ईश्वरनी आगळ नम्र चित्तथी शान्ति, सद्बुद्धि, पापनी क्षमा तथा ईश्वरनो प्रसाद मागवो ए प्रार्थना.

ईश्वरोपासना नित्य करवी ए विधि छे.



"अहरहः संध्यामुपासीत"

प्रतिदिने संध्योपासन करवुं.

दिवसना संधिमां एटले प्रातःकाल अने सायंकाल ए बे वेळा ईश्वरनुं उपासन ए संध्योपासन. अथवा संध्या शब्दनो बीजो अर्थ एवो छे के—

"सम्यग्ध्यायन्ति यस्यां सा संध्या"

रूडे प्रकारे ईश्वरनुं ध्यान करवुं ए संध्या.

ईश्वरनी उपासनानी अवश्यता ईश्वर प्रेरित बुद्धिथी तथा तेने अनुकूळ शास्त्र वचनथी आपणने समजायछे;माटे ए विधिनुं उल्लंघन करवाथी आपणने प्रत्यवाय[1] लागे छे. ईश्वर प्रत्ये आपणुं कर्तव्य कारिए थाय

---

१ दोष.

नहि ए न्हानो अपराध नथी; माटे ईश्वरनी उपासनानुं मुख्य कर्तव्य करवामां प्रमाद के उपेक्षा करवी नहि.

बे वेळा न बने तो निदान एकवार तो प्रार्थना अवश्य करवीज जोइये; मुख्यत्वे करीने प्रातःकाले ईश्वर प्रार्थना करवी जोइये, कारण ते वेळा मनोवृत्ति निर्मल होयछे.

स्नान करीने शुद्ध वस्त्र पेहेरीने एकांत स्थले दृढ आसन बांधीने तथा शरीर तथा मनने स्थिर राखीने ईश्वरनी उपासना करवानो आरंभ करवो; ए आरंभ करतां पहेलां तेनी प्रतिज्ञा करवी तेने संकल्प कहेछे. एनो क्रम एवो छे के-

आज मास पक्ष तिथिवार होय ते के-

जो जाणवामां होय तो केहेवुं.अमुक नामनो
हुं स्वशान्ति ईश्वरनो प्रसाद तथा तेना
सामीप्यनो लाभ पामवाने अर्थे तेनी उपास-
ना करुंछुं, ए रीते कहीने पछी उपासना-
नो आरंभ करवो.

परमेश्वरनी शक्ति तथा मंगल भावनुं चिं-
तन करीने ज्ञान चक्षुवडे ए परमात्माने जो-
तां जोतां तेना संमुख चित्त राखीने जे
भाषामां पोताने समजण पडती होय ते भा-
षामां प्रार्थना करवी;भाषा समज्याविना प्रा-
र्थना करवी निष्फल छे. अर्थ समज्याविना
स्तोत्र पाठ वांचवा नहि. ए शास्त्रनुं शि-
क्षावचन छे.

स्नान करीने तेमज संकल्प पूर्वक ई-
श्वरनी उपासना करवी ए शिष्ट संप्रदाय छे.
जे शिष्ट संप्रदाय निर्दोष तथा सारो होय

तेने मान आपवामां बाध नथी. प्रकृति बगडी होय तेथी अथवा कांइ अवश्यना कारणथी स्नान न थाय तो चिंता नथी.

स्नान करवाथी शरीर स्वच्छ थायछे अने मननो अने शरीरनो संबंध होवाथी शुद्ध जळे स्नान करवाथी मनोवृत्ति जागृत तथा शुद्ध थायछे.

संकल्प एटले ठराव करवो; ईश्वरनी उपासना करवानो प्रतिज्ञा पूर्वक निश्चय करवो; एम करवाथी ते करवानी अवश्यता प्राप्त थायछे.

प्रार्थना करती वेळा स्तोत्र पाठना अर्थ उपर तथा ईश्वर उपर लक्ष न रहेतां केवळ मुख पाठ करवो ए प्रार्थना योग्य नथी. माटे अर्थ समजीने प्रार्थना करवी.

१

स्थाणुरयंभारहारः किलाभूदधी-
त्यवेदंनविजानातियोर्थं ॥ योर्थज्ञ
इत्सकलंभद्रमश्नुते. (निरुक्त)

जे वेदनो अभ्यास करीने तेनो अर्थ जाणे नहि ते भार उपाडनार थांभला जेवो छे; जे अर्थ समजेछे ते कल्याण पामेछे.

उपासना करती वेला कोई कोई वेला ईश्वर स्वरूप आपणा अंतःकरणमां आविर्भूत[1] थतुं नथी अने तेणे करीने आत्मा निराश्रय तथा निरानंद थइने केवल मुख थकी शब्दोच्चार मात्र थायछे; पण मन ईश्वर तरफ जतुं नथी; विषय चिंतनथी निवृत्ति पामीने परमात्माना स्वरूपमां तल्लीन करवामां आपणे शक्ति प्रमाणे यत्न कर्या छतां पण चित्तनी एकाग्रता थती नथी

१ प्रकाशित.

तथा आपणे ईश्वराभिमुख थइने प्रार्थना कारिये छिये एवो आनंद थतो नथी एनुं कारण शुं ? एने शुं शरीरनी, मननी किंवा आत्मानी अव्यवस्था कहेवी ? वास्तविक जोतां शरीर संबंधी रोग, मानसी व्यथा तथा शोक, तथा आत्मा संबंधी पाप विकार आ त्रण कारणो मननी ईश्वर साथे एकाग्रता करवामां विक्षेप नांखेछे. रोग तथा विपत्ति ए आपणा हाथमां नथी, पण आत्माना पाप विकार दूर करवानो प्रयत्न करवो आपणा हाथमां छे; माटे पापासक्ति दूर करीने एकाग्र चित्ते ईश्वरना पुण्य मार्गे आत्माने लेई जवानो सर्व प्रकारे प्रयत्न करवो; तेम करवाथी आपणे उपासनाना फलनो लाभ तथा ईश्वर प्रसाद मळवाने अधिकारी थइने कृतार्थ थइशुं.

पापथी मुक्त थवानी आपणे ईश्वरनी प्रार्थना करिये छिये त्यारे पापनो परिहार करवानी आपणी इच्छा तथा प्रतिज्ञा दृढ हशे तो आपणी प्रार्थना सफल थया विना रहेवानी नथी.

ईश्वर अप्रतिम निर्विकार शुद्ध सत्य सच्चिदानंदरूप सर्वशक्तिमान् अजन्म अमर न्यायकारी परम मंगलमय परम कृपावान छे, तेनी मानसिक पूजा तथा आराधना एज उत्तम उपासना तथा भक्ति छे मूर्ति अथवा सृष्ट वस्तुनी पूजा ईश्वरनी खरी भक्ति नथी.

नतस्यप्रतिमाऽस्तियस्यनाममहद्यशः (यजुर्वेद. अध्याय. ३२. मंत्र. ३.)

जेनो (जे ईश्वरनो) प्रसिद्ध रीते मो-

टो यश छे तेनी प्रतिमा नथी.

आ पुस्तकमां प्रातःकालनी प्रार्थना छे ते अरूणोदय समये करवानी छे. पछी नित्योपासना छे ते गमे ते वेला करी सकाय छे; पण बनुं करीने भोजन पहेलां थाय तो सारुं. पछी स्त्री वर्गे करवानी प्रार्थना छे.ते पछी सोळथी ते एकवीस वर्ष सुधीनी वयना युवावस्थावाळाए करवानी प्रार्थना छे. पछी कौटुंबिक प्रार्थना, पछी भोजन समये करवानी, पछी सायंकालनी तथा रात्रिये शयन समये करवानी प्रार्थना छे;पछी संपत्ति तथा विपत्तिने प्रसंगे करवानी प्रार्थना छे; पछी पाप परित्राणार्थे अने ईश्वरोपकार स्मरणनी प्रार्थना छे.ए अनुक्रमे बार प्रार्थना छे.

ध्यानमां राखवुं जोइये के आ प्रार्थना-ओ सर्व माणसोने सामान्य रीते करवानी छे. कोइ विशेष बनावने लीधे प्रार्थना करवानी होय ते समये प्रसंगोपात्त जे कहेवानुं के मागवानुं होय ते योग्य शब्दोथी जोडीने ईश्वरनी प्रार्थना करवी.

गद्य पद्य प्रार्थनामां ईश्वरना हस्त पादादिनी कल्पना भाषाना गौरव तथा सौंदर्यने माटे अलंकाररूप छे एम समजवुं.

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः । स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम् ॥ (श्वेताश्वतर उपनिषत् अध्याय ३ मंत्र १९.)

ग्रहण करेछे, चक्षु नथी पण जुवेछे, कान नथी पण सांभळेछे.

जाणवायोग्य सर्व पदार्थने ते जाणेछे. ते सर्वथी मुख्य महांत पुरुष (परिपूर्ण) छे एम कहेलुंछे.

ईश्वर सर्व व्यापकछे; जगत्नी प्रत्येक रचना तथा घटनामां एनी ज्ञानशक्ति, उपकार, दया तथा मंगळभाव जोवामां आवेछे. एना उपर विश्वास तथा प्रेम राखवो एनी शुद्ध उपासना करी तेने शरण थवुं एज मनुष्य देह धारण करयानुं सार्थक्यछे.



## प्रात:स्मरण.

### प्रभातीउं.

धन्य मंगल उष:[1] समय सर्वेश
सच्चिद्घनानंदने शरण आवुं,
प्रेमपुष्पांजली अर्पि प्रभुने परम
भक्तिथी ब्रह्मसंगीत गाउं. १ धन्य०
सर्व काले करोछो तमे रक्षणो ते
कृपानो हुं उपकार मानुं,
सत्य त्राता तमे शान्तिदाता तमे
सत्य तमने परम पूज्य जाणुं. २ धन्य०
अखिल ब्रह्मांडना आदि कारण
तमे कीधि धारण तमे सर्व सृष्टि,

---

१ प्रात:काल; पाछली पांच घडी रात्रि होय त्यांथी सूर्योदय थतां सुधीना काळने उष:काळ कहेछे

अणत शरणागत प्राणि ऊपर तमे
राखशो प्रेमनी पूर्ण दृष्टि. ३ धन्य०
भक्ति श्रद्धा सहित प्रभु आराधना
एज छे मुख्य मानुष्य धर्म,
ए परम धर्मनुं तत्व प्रीछ्या विना
ध्यान पूजन वृथा सर्व कर्म. ४ धन्य०
साधु पुरुषो सदा भक्ति प्रभुनी करे
पाद कदि नव धरे पाप पंथे,
पुण्य आचरणथी प्रेम प्रभुनो वधे
ए महा वाक्य छे वेद ग्रंथे. ५ धन्य०
द्वार आवी प्रणमि मागुं वरदान हुं
दीन अज्ञानने ज्ञान आपो,
धर्मनो मार्ग प्रभु प्रेमथी दाखवी
दुष्ट दुर्वासना सर्व कापो. ६ धन्य०
भक्ति प्रभुनी करुं दुष्ट कृतिथी डरुं

ધર્મની સર્વે શિક્ષા હું પાળું,
સ્વામિ તમને સદા સન્નિધ જાણીને
નવ કદી નિંદ્ય માર્ગે હું ચાલું. ૭ ધન્ય૦
એમ હું સત્ય સંકલ્પ કરિ નિત્યના
કાર્ય વ્યવહારમાં વૃત્તિ રાખું,
તુચ્છ વિષયોતણા ભોગ સર્વે તજી
મુખ થકી અનૃતવાણી ન ભાખું. ૮ ધ૦
પૂર્ણ પુરુષાર્થ બળ આપિને દાસને
સર્વદા નાથ રે'શો સહાય,
પ્રભુ કૃપા જો હશે તોજ કારજ થશે
તે વિના શ્રમ વધા વ્યર્થ જાય. ૯ ધ૦
નાથ મારાં ક્ષમા પાપ સર્વે કરી
હૃદયપરિતાપ નિઃશેષ હરશો,
પતિત પાવન તમે પ્રેમ રાખી સદા
સકળ શુભ કામના પૂર્ણ કરશો. ૧૦ ધ૦

मंगलाराधना करि प्रभाते पर-
ब्रह्मने प्रेमथी पाय लागुं,
सत्य व्रत पालवा सत्पथे चालवा
नित्य सन्मति महाराज मागुं. ११ध०
भक्तवत्सल तमे भक्तनी विनतिने
सांभळी नित्य संभाळ लेशो,
क्षेम कल्याण करिने कृपाथी तमे
मंगलाशीष जगदीश देशो. १२धन्य०

संगीत.

प्रातसमय सच्चिद्‌घन स्मरण हृदय
धारिये ॥
प्रेमभक्ति भावथकी प्रणामे वारवार
प्रभु, मंगलजयकारि नाम मुख थकी
उच्चारिये. १ प्रातसमय०
भानकिरण उदयथाय रजनितिमिर

दूर जाय, सुंदर सुखकारि नियम चित
विषे विचारिये. २ प्रातसमय०
सकलसृष्टिआदिकारण त्रिविधि जनित
तापहरण, भवतरण अशरणशरण च-
रण प्रते धाइये. ३ प्रातसमय०
मंगलमय देव दयासिंधु उपकार स्मरी,
प्रभुप्रियतम कार्य करी परम लाभ पा-
मिये. ४ प्रातसमय०
सर्व स्थानमां महाधिराज छे विराज-
मान, भक्तिसुधापान करी ब्रह्मगान
गाइये. ५ प्रातसमय०
एक अद्वितीय देव अन्य नहीं कोइ
सेव्य, सत्य धर्म धारि सदा साधन
शुभ साधिये. ६ प्रातसमय०
विषय सुख असार समजि पाप दुर्वि-

कार तजी, त्रिभुवन प्रतिपाल जजी पाप क्षमा मागिये. ७ प्रातसमय० परम देव दर्शन आनिवंदन करि सर्व काल, प्रेमभक्तिपुष्पमाल, प्रभुपदे वधाविये. ८ प्रातसमय०

ॐतत्सत्परमात्मनेनमः

हे परमात्मा आ विश्व तें निर्माण कर्युं छे, तुं तेने नियममां राखे छे, अपार करूणाथी आ विश्वमांना असंख्य प्राणियोनुं तुं संरक्षण करेछे. हे अनाद्यंत परमेश्वर! तारो अंतर बाहर सर्व ठेकाणे वास छे, तुं सत्य स्वरूप मंगलस्वरूप जीवोनुं जीवन, हुं तने नमस्कार करूंछुं.

उपजाति.

विश्वेश चैतन्यमयाधिनाथ,

अनाद्यनंता प्रभु छो अजात;

प्रातःसमे ध्यान धरुं तमारुं,
सदा करो रक्षण नाथ मारुं. १
परोपकारार्थ करुं हुं कर्म,
सदा हुं पाळुं शुभ नीतिधर्म ;
एवी तमे सन्मति नित्य देशो,
मने कृपानाथ निभावि लेशो. २
नमी नमी हुं करुंछुं प्रणाम,
करो कृपाथी परिपूर्ण काम ;
संसारसिंधू थकि नाथ तारो,
प्रसाद पामुं प्रभु हुं तमारो. ३

हे करुणामय पिता! तुं सर्व अवस्थामां मारुं संरक्षण करेछे. तेने वास्ते तारी कृपानो उपकार मानी हुं तने प्रातःकालनी पूजा तथा स्तुति उपहार अर्पण करुंछुं. रात्रिये असहाय अवस्थामां तें मारुं रक्षण कर्युं छे.

तारी करूणाथी नवा उद्यम तथा बलनी साथे आ नवा दिवसना कार्यमां प्रवृत्त थाउं छुं. सर्व वस्तुमां तारी महान् करूणा मंगलभाव तथा [1]पालनी शक्ति जोवामां आवे छे; आजना उद्योगमां प्रवृत्त थतां पेहेलां हुं तारे शरणे आवीने मारा शरीर तथा मननुं सघळुं बल तारा कार्यमां लगाडवाने चाहुं छुं. जे लालचो मारी परीक्षा जोवाने वास्ते वाट जुवेछे तेनो अतिक्रम करवाने, तेने वश न थवाने तुं मने सामर्थ्य आप. तारा मंगळ आदेश, तारी शुभ शिक्षा, एज मने नियममां राखनार छे. तारो प्रेम मारा मनने आर्द्र करे अने तारूं पवित्र रूप मने प्रदर्शन थईने सदाकाल मारा लक्षमां रहो ए मागुं छुं.

---

१ पालन करवानी.

हे करुणानिधान! मारी अपवित्र कामनाओ तथा विषयलालसा दूर कर; अने मारी वासना तथा मनोभावने तारी पासे लेई जईने पवित्र कर. मारां बधां कर्तव्यसाधनोमां तथा संसारना बधा संसर्ग तथा बधां कार्यमां मारा अंतःकरणने निर्मल राख. प्रभो! तुं एवी दया कर के विषयवासना तथा लालचो तारा उपरना मारा विश्वासने हठावी न सके, मारा जीवननी सघळी अवस्थामां तारी साथे दृढ संबंधथी बंधायेलो रहुं; मने तुं ए स्मरण करवानुं शीखवके मारा जीवननो उद्देश मात्र तारो प्रेम तथा तारो प्रसाद प्राप्त थवाने माटे छे; अने ए उद्देश उपर लक्ष राखीने आजनो दिवस तथा हवे पछीना बीजा दिवसो निर्गमन करी सकुं एवी सहायता

आप. हे अविनाशी पिता ! तुं मने एवुं सामर्थ्य आप के पवित्रता तथा विश्वासमां चढतो जाउं जेथी प्रतिदिन तारी पासे पासे आवतो जाउं ; तारुं कारुण्य अपार छे, हुं तारे शरण आव्यो छुं, मने शुद्ध मति आपीने पावन कर.

भुजंगी.

दयासागरा सत्य सर्वज्ञ देव,
तमारी करुं शुद्धभावेथि सेव ;
तमे सर्व प्राणीतणा मात तात,
नमुं नित्य हुं प्रेमथी प्राणनाथ. १
लिधी रात्रिमां नाथ संभाळ मारी
दयासिंधु दीसे दया ए तमारी ;
पिता मात माने बहू उपकार,
समर्पुं तने प्रेमना पुष्पहार. २

दिसे आ बधी सृष्टि आश्चर्यकारी,
प्रकाशी रही पूर्ण लीला तमारी;
तमारे बळे आ जगद्यंत्र चाले,
तमारा रुडा नीमने सर्व पाळे. ३
ग्रहो राशिचक्रे क्रमेथी फरेछे,
तमारा गुणोनी प्रसिद्धी करेछे;
क्षितीजे रुडा भानुरश्मि प्रकासे,
मने आ समे पूर्ण आनंद भासे. ४
तमारी कृपानो मने बोध थाय,
सदा अंगमां प्रेमऊर्मी जणाय;
तमारी महा शक्तिने चित्त धारुं,
करुं हुं उपस्थान रुडुं तमारुं. ५
विराजो तमे सृष्ट वस्तुथि भिन्न,
सदा शान्त रूपे रहोछो प्रसन्न;

तमारी कृपाथी महा कृत्य थाय,
रुडां कार्यमां नाथ रे'शो सहाय. ६
महा मोहना पाश छे आसपास,
फसावे मने इंद्रियोना विलास ;
न जाणुं कियां संकटोनो प्रसंग,
अकस्मात आवी पडे आज अंग. ७
तमे ते समे धैर्य संपूर्ण देशो,
मने दीनने नाथ संभाळि लेशो ;
तमारी कृपानो हुं विश्वास धारुं,
तमारा रुडा ध्यानने ना विसारुं. ८
दया वृक्ष छाया निचे हुं निवासुं,
पराभक्तिथी हुं प्रभूने उपासुं ;
तमे रुडी बुद्धी कृपानाथ आपो,
अमारां बधां दुःख संकष्ट कापो. ९
दयाथी तमे दोष सर्वे क्षमावो,

सदा दासने नीति रूडी बतावो ;
निवारो अविद्यातणा अंधकारो,
प्रकाशो तमे ज्ञाननो दीप मारो. १०
सदा पाळुं हुं नीतिना मुख्य धर्म,
करुं विश्वमां सर्व कर्तव्य कर्म ;
दुराचारथी सर्वदा दूर राखो,
दयासिंधु सद्धर्मनुं ज्ञान दाखो. ११
नमीने नमी हुं सदा पाय लागुं,
क्षमानाथ हुं पाप कर्मोनि मागुं ;
अती नम्रताथी कहुं वार वार,
कृपाथी करो प्रार्थना अंगिकार. १२

## श्रीजगदीश्वरो जयतु,

### नित्योपासना.

ॐतत्सत्परमात्मनेनमः

ॐसत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मआनंदरूपम्
मृतंयद्विभातिशान्तंशिवमद्वैतं.

जे ईश्वर सर्व ठेकाणे विराजमान छे, ते सत्यस्वरूप, ज्ञानस्वरूप, अनंतरूप, परमात्मा, आनंदरूप, अमृतरूप, गुणवडे प्रकाशी रह्यो छे, ते शान्त मंगलमय अद्वितीय छे.

सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणम् अ-
स्नाविरंशुद्धमपापविद्धम्।कविर्मनी-
षीपरिभूःस्वयंभूर्याथातथ्यतोर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यःसमाभ्यः

ईश्वर सर्वव्यापी छे, शुद्ध छे, एने शरीर नथी, अखंड छे. शिरा (नाडी) रहित, निर्म-

ल, निष्पाप, सर्वदर्शी, सर्वोपरि, तथा स्वयंभू छे; ते सर्वकाल प्रजाने यथाघटित अर्थ आपेछे.

एतस्माज्जायते प्राणो मनः सर्वेंद्रि-याणि च। खंवायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी ॥

ईश्वरथी प्राण, मन, तथा सर्व इंद्रियो, आकाश, वायु, ज्योति, जल तथा सर्वनो आधार आ पृथिवी ए सघळुं उत्पन्न थायछे.

दिव्योह्यमूर्तः पुरुषः सबाह्या
भ्यंतरोह्यजः। अप्राणोह्यमनाः
शुभ्रोह्यक्षरात्परतः परः ॥

ईश्वर मूर्ति रहित दिव्य छे; पुरुषः एटले परिपूर्ण, बाहर तथा अंतरमां छे; जन्म रहित, प्राण मन रहित, शुद्ध छे; अक्षर जे जीव तेनाथी पण पर छे, अर्थात् जीवनां

लक्षणथी ईश्वरनां लक्षण भिन्न छे.

ईश्वर सर्व व्यापी छे.

सर्वतःपाणिपादंतत्सर्वतोऽ
क्षिशिरोमुखम्।सर्वतःश्रुति-
मल्लोकेसर्वमावृत्यतिष्ठति॥

जेना हस्त पाद सर्व ठेकाणे छे, जेनां नेत्र, शिर अने मुख सर्वत्र छे, जेना कान सर्व ठेकाणे छे; ते जगत्मां सर्वने आवरण करीने रहेलो छे; तात्पर्य एके ए परमात्मानी क्रिया ज्ञान तथा मंगलभाव स्वभावतः सर्व ठेकाणे छे. एवा ईश्वरने शरणापन्न थईने तेनी आराधना करुंछुं.

परात्परतरंतत्त्वंशरणागतव-
त्सलम्।मनसावचसानित्यं
प्रणतोऽस्मिसदाशिवम्॥

परथकी पर परमतत्त्व, शरणागत वत्सल, सदा मंगलरूप ईश्वरने मनवाणीथी नित्य प्रणाम करूंछुं.

हे परमकृपालु परमेश्वर! तुं मने परम सुख तथा शान्ति आपनार छे; अहींनी तथा परकालनी मारी आशानो मूलाधार तुं छे. तारा मंगलाश्रये हुं आ जगत्मां निवास करूंछुं. मारूं सर्व जीवन तारे हाथ छे; तुं मारा उपर उपकार करेछे तेना स्मरण पूर्वक तने प्रेमथी प्रणाम करीने मारा मनोभाव तने निवेदन करूंछुं.

हे महापिता! तुं मारूं रक्षण करेछे; मारूं पालन पोषण करेछे, जे सुख मने मळ्युं अने मळशे ते तारी कृपाथी, तारा आशीर्वादथी. हे प्रभो! सुखमां के दुःखमां तने भूली न जतां तारा उपर लक्ष राखी सर्व व्यवहार तने सान्निध गणीने ता-

रो भय राखीने चलावुं एवी तुं मने सुमति आप. हे कृपासागर! तारा उपर प्रीति राखुं, तने प्रिय कार्य होय तेज करूं, जे करवाथी तने क्रोध चढे ते कर्मनो त्याग करूं एवुं मने ज्ञान आप. तारी इच्छा विरुद्ध काम करवानी वृत्ति थाय तो ते दबावी देवानुं तुं मने सामर्थ्य आप. माराथी कांइ कुकर्म थाय तो तेनो पश्चात्ताप करीने ते कर्म फरीथी न थाय एवो यत्न करूं अने सदाचरणे चालुं एवी तुं मने प्रेरणा कर. मारां सगां, मारा मित्र तथा मनुष्य भाइयो प्रत्ये मारां कर्तव्य तथा मारे पोता प्रत्ये चालवानो मारो धर्म तथा तारी साथेना मारा गंभीर तथा चिरकालना संबंध उपर लक्ष राखीने तारी शिक्षा पाळवानुं मारूं धर्म साधन भूली न जाउं एवी तुं कृपा करीने मने चेतवणी आप.

तारा उपर श्रद्धा राखी तारी भक्ति करूं, संसारनुं सुख अशाश्वत छे ए समज मारा मनमां रहे, अने दुष्ट विकारोने आधीन न थाउं, मनोविकारने जीतीने तेनो अमर्याद तथा तारा नियम विरुद्ध उपयोग न करूं, एवी हे दयासिंधु! तुं मने सद्बुद्धि आपी मारूं मन जागृत राख. तारा मंगल ज्योतिनो प्रकाश मारा अंतःकरणमां पडे अने मारूं मन पवित्र रहे ए मारी इच्छा अने ए मारी प्रार्थना छे.

इन्द्रवज्रा.

अनंत देवेश जगन्निवास,
रही तमारे शरणे हुं दास;
उपासना आ समये करूंछुं,
अनुग्रहोने मनमां स्मरूंछुं. १
कृपा करी सन्मति नित्य देशो,
मने सदाकाल सहाय रे'शो;

३५

समीप आवी प्रभु पाय लागुं,
अजस्र प्रेमामृतवारि मागुं. २

अशक्त अल्पज्ञ हुं दीन प्राणी,
वदी सकुं शुं मुखथी हुं वाणी;
अहो कृपाथी मुज दीन हाथ,
अनाथने नाथ करो सनाथ.

अखंड विश्वास धरी रहुं छुं,
मनोर्थ मारा तमने कहुं छुं;
दया न पामे प्रभुनो विराम,
छिले धरुं ए परिपूर्ण हाम. ४

कदी न पामुं प्रभु हुं निपात,
निभावि ल्यो वत्सलताथि तात;
करुं नमस्कार हुं जोडि हाथ,
प्रसन्न हे'शो विभु विश्वनाथ. ५

हे करुणानिधे ! तारा विना मारो कोइ बेली तथा त्राता नथी. तुंज मारुं परित्राण करनार, तुंज मारो शरण्य, तुंज मारुं कल्याण करनार छे. तुं मने सहाय नहि करे तो बीजुं कोण करशे ?

हुं निर्बल अशक्त प्राणी छुं ; माटे मारा मनमांथी दुर्विकारोने कहाडीने मारुं मन पवित्र कर. मारुं कर्तव्य भूली न जाउं, अने तारा संमुख आवी तारो प्रसाद, तारो प्रेम, संपादन करवाने योग्य थाउं, एवां धर्म साधनो करवानुं मने बल आपी मारा सदुद्योगमां तुं सहाय था.

हे दयामयपिता! हुं तारो सहस्त्रापराधी छुं; तारा नियमो में घणीवार उल्लंघन कर्या छे; आ दोष संभारुं छुं ते वेला मारा मनने लज्जा तथा ग्लानि आवे छे; पण तुं मारी नबळाई तथा मंदमतिने जाणे छे; तुं मारी

क्रिया सामुं जोइश तो मारो उद्धार थवा-
नो नथी ; परंतु मात्र पितृ प्रेमथी मुज दीन
रंक बालक उपर दया करीश तोज मारी
सद्गति थशे; माटे हे परम करुणामय माय
बाप ! मारा उपर कृपावलोकन करी मारा
अपराधो क्षमा कर, अने तारी कृपाधारा
सर्वकाल मारा उपर वरसावी मारा आ-
त्मानी उन्नति थाय एवो तुं मंगल आशी-
र्वाद दे.

ॐभूर्भुवःस्वः। तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदे-
वस्यधीमहि। धियोयोनःप्रचोदयात्।

ॐइतिसृष्टिस्थितिप्रलयकर्ता। तत्सवितुःत-
स्यसवितुःजगत्प्रसवितुः प्रेरकस्यसर्वकामानां
अन्तर्यामिनोविज्ञानानन्दस्वभावस्यब्रह्मणःदे-
वस्यद्योतनात्मकस्यपरमेश्वरस्यवरेण्यंवरणीयं
भर्गःभर्गतेजःज्ञानंशक्तिंचधीमहि, ध्यायेमवयं।

धियः बुद्धिवृत्तीः यः सविता नः अस्माकं प्रचोद-
यात् सत्कर्मानुष्ठानाय प्रेरयतु (प्रेरयति) कीदृशं
भर्गः भूर्भुवः स्वरादि सर्वलोकप्रकाशकम्.

आ जगत्ने बनावनार, धारण करनार तथा प्रलय करनार सविता (उत्पन्न करनार) सर्व शुभ कामनाना प्रेरक (चेतवनार) अंतर्यामी आनंदस्वरूप एवा परमेश्वर प्रकाशमान् देव जे अमारी बुद्धिने सारां कर्म करवानी प्रेरणा करेछे तेना श्रेष्ठ भर्ग एटले तेज ज्ञान अने शक्तिनुं अमे ध्यान करिये छिये. ए तेज केवुं छे! ते त्रणे लोकने प्रकाश करेछे.

ॐ य एकोऽवर्णो बहुधाशक्तियोगात्
वर्णाननेकान्निहितार्थो दधाति वि-
चैति चान्ते विश्वमादौ स देवः स नो
बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु.

प्रकाशमान् ज्ञानवान् देव परमेश्वर अमने शुभ सारी बुद्धि आपो.

पितासिलोकस्यचराचरस्य
त्वमस्यपूज्यश्चगु[१]रुर्गरीयान् ।
नत्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकःकुतोन्यो
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव॥ १
तस्मात्प्रणम्यप्रणिधायकायम्
प्रसादयेत्वामहमीशमीड्यम् ।
पितेवपुत्रस्यसखेवसख्युः
प्रियःप्रियायार्हसिदेवसोढुम्. २
नमोनमस्तेस्तुसहस्रकृत्वः
पुनश्चभूयोपिनमोनमस्ते॥
नमःपुरस्तादथपृष्ठतस्ते.
नमोस्तुतेसर्वतएवसर्व ॥ ३

---

१ गुरोर्गरीयान् एवो पण पाठ छे.

जेना *प्रभाव जेवो बीजानो प्रभाव नथी एवा हे अप्रतिम प्रभाव ईश्वर! तुं सचराचर सृष्टिनो पिता (उत्पन्न करनार) छे माटे तुं पूज्य परमगुरु छे. त्रणे लोकमां तारा सरखुं कोइ नथी तो तारा करतां अधिकतो कोण होय ?

माटे जगत्‌ना स्वामि [१]स्तुत्य तने दंडवत् प्रणाम करीने तारो प्रसाद मागुंछुं के जेम पुत्रना अपराध पिता क्षमा करेछे, मित्र मित्रना अपराध क्षमा करेछे, पति पत्नीना अपराध क्षमा करेछे, ते प्रमाणे मारा अपराध क्षमा करवा तने घटेछे.

हे सर्वात्मन् तने मारा सहस्र नमस्कार छे; फरीफरीने तने आगळ नमस्कार पाछळ नमस्कार अने सर्व ठेकाणे नमस्कार करूं छुं.

रक्षणने माटे अमारा सुखने माटे तें घणा पदार्थो सरज्या छे. तारी शक्तिनी, तारी दयानी, तारा उपकारनी स्तुति माराथी थई सकती नथी. हुं निर्बल प्राणी मारी शी शक्ति के तारा गुणनां वखाण करी सकुं? छोकरां उपर माबापनो वाहाल होयछे ते प्रमाणे तुं मारा उपर प्रेम राखेछे; हुं घणा दोष करूंछुं पण तेने न जोतां मारूं पालन करेछे. आ तारो मोटो उपकार छे.

हुं अधम पापी, मारो निभाव तुं करूणा लावीने करीश तोज थशे. तें मने आ संसारमां सारां काम करवाने, रूडे मार्गे चालवाने जन्म आप्यो छे; तुं जे कामथी प्रसन्न थाय तेज मारे करवां जोइये. तुं अंतर्यामी छे, तारी नजर माहारां बाहारनां कामो उपर छे तेमज मारा मनमां सारा के नठारा विचार थता होय ते तुं जाणी

सकेछे. ताराथी काइ छानुं रहेवानुं नथी.

हे करुणासागर! तने प्रेमथी प्रणाम करीने मागुंछुं के मने खोटी चालथी, खोटा कामथी दूर राख. हुं जूठुं बोलुं नहि, मारा घरधंधामां प्रमाणिकपणे तथा साचाइथी चालुं, शीलव्रतनो कदि भंग करूं नहि, एवी तुं मने सुमति आप.

*मारा पतिनी रूडी आज्ञा मानुं, तेनी सेवा करूं, तेना सुख दुःखनी विभागी थाउं, अने पवित्रताधर्म पाळुं, एवी मने प्रेरणा करी मने रूडो मार्ग बताव.

हे मायबाप! तुं मारो तारक छुं; तारा

---

*विधवाये आ वाक्यो न बोलतां नीचे प्रमाणे बोलवुं. "मारा कुटुंबमां वडील होय तेनी रूडी आज्ञा मानुं अने नीतिना व्रत पाळुं."

प्रौढ वयनी विधवाये पोतानी स्थिति होय ते प्रमाणे जेम घटे तेम बोलवुं.

विना मारो बेली कोई नथी. हुं तारी आज्ञा तथा नियम प्रमाणे चालुं, कोई साथे वैर-भाव द्वेषभाव राखुं नहि, जूठुं बोलुं नहि, छल कपट करुं नहि, अने तारा उपर खरी श्रद्धा, खरो प्रेम राखी तारी भक्ति करुं एवी मने तुं चेतवणी आपी मने तारा मंगल पवित्र मार्गे चढाव.

तने फरी फरीने नमस्कार करीने विनयथी मागुंछुं के मारी आ प्रार्थनाने सांभळीने मारा दोषनी, मारां पातकोनी क्षमा करी सदा रूडे आचरणे चालवानुं हे दयासागर प्रभु! मने सामर्थ्य आप. मारो आत्मा पवित्र करी परलोकमां मारी सारी गति थाय एवी तुं कृपा करीने आशीष दे. हे दया-सिंधु! हुं तारे शरण छुं.

## ईशस्तुति.

पिता तमे मात तमे अमारा,
तमे महांगादि देव मारा ;
करुं विनंती विभु जोडि हाथ,
रहुं तमारे शरणे हुं नाथ. १
अनाथ प्राणी अबळा हुं दीन,
मती अमारी अतिशे मलीन ;
कृपा करी दोष बधा शमावो,
सुनीतिनो मार्ग मने बतावो. २
सदा हुं पाळुं शुभ शील धर्म,
करुं तमारां प्रियकारि कर्म ;
करी करीने प्रभु पाय लागुं,
कृपा तमारी हुं अखंड मागुं.
समीप आवी तमने कृपाळ,
बधावुं प्रेमाक्षत सर्व

कृपा करी पातक सर्व कापो,
महा प्रभू मंगळ वृत्ति आपो. ४
अमारुं आ अर्चन मानि लेशो,
प्रसन्नताथी वरदान देशो;
उपासनान्ते करुंछुं प्रणाम,
पुरा करो मंगल सर्व काम. ५
अन्यथाशरणंनास्तित्वमेवशरणंमम।
तस्मात्कारुण्यभावेनरक्षरक्षमहेश्वर।

हे महेश्वर तारा विना मारे कोईनुं शरण नथी, तुंज मारुं शरण छुं; माटे करुणा-भावथी मारुं रक्षण कर.

# छोकराए करवानी प्रार्थना.

हे परमेश्वर तुं सत्य, मंगल, सर्व ठेकाणे व्यापी रह्यो छे; तारी मूर्ति के आकार नथी; परमचैतन्यरूप, महा समर्थ छे; तारी कृपा अपार, तारो महिमा अपार, तारी शक्ति अपार छे.

हे महाधिराज ! हुं तने साष्टांग दंडवत् प्रणाम करुंछुं.

हे दयासिंधु ! आ जगत् तें सरज्युं छे. आकाशमां सूरज, चंद्रमा, ग्रह तथा तारा, ए बधां तें उत्पन्न कर्यां छे. आ पृथिवी, समुद्र, नदी, सरोवरो, पाहाड इत्यादि असंख्य वस्तुओ तें सरजी छे. जुदा जुदा जीवोने उत्पन्न करीने तेओना पोषणने माटे तें यथा घटित गोठवण करीछे. अमारे

खावा पीवानी तथा अनेक प्रकारनां सुख मळवानी वस्तुओनो अखुट भंडार तें भरी मुकेलो छे; आ तारो मारा उपर केटलो बधो उपकार तथा दया छे! एनुं वर्णन हुं रंक बालक शुं करुं? तुं पिता प्रमाणे मारी संभाळ लेछे; तुं मने देखातो नथी, पण तुं मने जुवेछे. मने विश्वास छे के तुं सत्य छे. तारी शिक्षा, तारी आज्ञा पाळवी ए मारो धर्म छे.

हे महाधिराज भक्तवत्सल भगवान्! हुं तारे शरणे आवीने तारे चरणे मारुं मस्तक नमावी मागुंछुं के तुं मने एवी रुडी बुद्धि आप के हुं सदाकाल तारा मंगल नियम, तारी सुशिक्षा पाळुं, भुंडा कामथी दूर रहुं, जुठुं बोलवुं, कोईना शरीरने के मनने दुःख देवुं, चोरी करवी ए सघळां पापकर्मथी वेगळो रहुं, ने अनीतिने रस्ते

चालुं नहि.

तें मारी संभाळ राखीने घणुं सुख आ-

पुं छे तेनो हुं मा[illegible] अंतःकरणथी तारो

पाड मानुं छुं. हे प्रभो ! तुं मारां सघळां

पाप माफ कर अने मारुं मन पवित्र कर.

खोटी इच्छाओ न थाय तथा दुष्ट तथा

पाप भरेला विचार मने न सुझे एवी मन

वश राखवानी मने शक्ति आपी सदा सत्क-

र्मनी प्रेरणा कर.

तुं मारां बधां कामने जुवेछे. मारा मनना

विचार तुं जांणी सके छे, ताराथी कांइ

पण छानुं रहेवानुं नथी; माटे हे विश्वपिता!

तुं मारुं मन निर्मल कर; मने सत्यधर्म व-

ताव. मारूं आ लोक परलोकमां कल्याण

थवानुं साधन तारी खरी भक्ति छे ; माटे

तारी भक्ति पवित्र मनथी तथा दृढ विश्वा-

सथी करीने तने प्रसन्न राखुं,तारा करेला

उपकारोने भुली न जाउं एवी तुं मने सुमति आपी मारूं संरक्षण कर.

हुं मारां मात पिता तथा मारूं पालन करनार जेओ मारी चिंता राखीने मारूं पालन पोषण करेछे तेओना उपकार भुली न जाउं, तेमनुं अपमान कदी करूं नहि, तेओनी सेवा करूं, मारा भलाने वास्ते तेओए जे जे शिखामणो आपी होय तथा आपे ते ध्यानमां राखुं, तेओनी [1]अवज्ञा करूं नहि, तेओनी साथे एवी रीते चालुं के तेओना चित्तने मारे वास्ते कांइ दुःख न थाय, अने तेओ मारी चाल चलण जोइने संतोष पामे, मारां भांडुओ तथा सगां मित्रो साथे स्नेहभाव राखुं, कोई उपर वैर राखुं नहि, कोईनी अदेखाई करूं नहि,

कोइनी निन्दा करुं नहि, सर्व वाते मारी चाल सारी राखी तने सारां लागे तेज काम करुं, दुराचरण, कुमार्ग तथा कुसंगनो त्याग करुं एवी मने मंगलवृत्ति आपी मने सर्वकाल सहाय था.

हे माय बाप ! तने बे हाथ जोडीने नमस्कार करी प्रार्थना करुंछुं के तुं मने सर्व वाते सुखी राखी मारो अभ्युदय तथा कल्याण थाय एवो मने हे दयामय प्रभु! सदा आशीर्वाद दे.

सदा सघळी नाथ संभाळ ल्योजो;
कृपाथी करो सहु पापो अमारां,
अने आपजो साधनो सर्व सारां. २
तमे सत्य छो नाथ त्राता अमारा,
कहुं छुं प्रभु धन्यवादो तमारा;
तमारी सुशिक्षा हुं प्रेमेथि पाळुं,
सदाकाळ सद्धर्म मार्गे हुं चालुं. ३
विनंती तमे सांभळो विश्वनाथ,
अने दीनने तारजो साहि हाथ;
कृपाथी मने सर्व वाते निभावो,
सदा नीतिनो मार्ग रूडो बतावो. ४
पिता सर्व सेवा तमे मानि लेजो,
वळी ईश्वरी ज्ञानदीप देजो;
करुं छुं नमस्कार हुं वारवार.
तमे छो सदा सर्वना दुःखहार. ५

हे पिता ! अमे पळे पळे पातक करिये छिये; पण तुं अमारां कुकर्म उपर नजर न करतां अमारा उपर प्रेम राखेछे, अमारुं रक्षण करेछे, ए तारा मंगळभाव, तारी करूणानुं स्मरण करतां अमारूं हृदय भराइ आवेछे. अनुतापितचित्ते अमारां पातकोनी क्षमा मागिये छिये.

शिखरिणी.

परब्रह्मन्देवा,
परमपद दाता प्रभु तमे,
करी अर्चासेवा;
तव शरण आवी सहु अमे;
सदानंदे वंदी,
विनति करिये नाथ तमने,
तमे अंतर्यामी,

गुण सुमति द्यो नित्य अमने. १

जगल्लीला कीधी,
परम उपकारी प्रभु तमे,
महातत्वज्ञानी,
निरखि रचना नित्य प्रणमे;
अमे अल्पज्ञानी,
अतिशय अमारी जडमति,
प्रभो शुं पामीए,
अकळ तव अत्यद्भुत गति. २

सहु आवी द्वारे,
विनति करिये नित्य तमने,
जईसोछे भारे,
भवपति तमारोज अमने;
सदा शान्ती आपी,
हृदयगत संताप हरशो;

કૃપા ભાવે સ્વામી,
કુશળ શુભ કલ્યાણ કરશો. ૩
અમે અલ્પ પ્રાણી,
પ્રભુ શુભ ગુણો શું ઉચ્ચરિયે,
સદા જોડી પાણી,
અનુગ્રહ અમે સર્વ સ્મરિયે;
પ્રજા જાણી પાળો,
પતિત હૃદયે સત્ય ધરિયે,
અમે તારાં બાળો,
પ્રભુ તવ કૃપાથીજ તરિયે. ૪
સદા મૈત્રી રાખી,
હળિ મળિ અમે સર્વ રહિયે,
તમારી સેવાનો,
પ્રતિદિન અમે લાભ લહિયે;
તમારી ઇચ્છાઓ,

प्रणमि तमने नाथ कहिये,

तमारी छायामां

रहि तव कृपा दोरि ग्रहिये.

हे पतितपावन प्रभो! तुं अमारा आ लोक तथा परलोकना सुखने अर्थे योग्य साधनो बतावी अमारुं संरक्षण करी तारे मंगल मार्गे लेईने अमने पावन कर. अमे अमारा प्रत्येकना कर्तव्य धर्मछे ते प्रमाणे चालिये. अमे सर्व संपीने रहिये, एवी अमने सदा सुबुद्धि आप.

हे महाधिराज मंगलकारी प्रभु! तुं चिन्मय सकलैश्वर्य संपन्नछे. तारा प्रकाशथी सर्व जगत् प्रकाशी रह्युं छे; तुं परमज्योति, तने अमारा आत्मानो प्रीतिभाव अर्पण करी तारे मंगलपदे वारंवार नमस्कार करीने प्रार्थना करिये छिये के तुं तारी करुणा-

मृतवाणीनी शीतळ अने सुखदायक धारा अमारा उपर निरंतर वरसावीने अमारूं संरक्षण कर. आ अमारी अभिलाषा छे ते कृपा करीने परिपूर्ण कर.

वसंत तिलका.

हे देव मंगल दयानिधि विश्वनाथ,
आराधिये प्रभु अमे सहु जोडि हाथ;
अमे तमारुं जपिने शुभकारि नाम,
सर्वे कुटुंब मळिने करिये प्रणाम. १
सर्वे तमारुं प्रभु मंगल छे विधान,
आपो सदा सुमति सत्य कृपानिधान;
पामे नहीं कदि दया प्रभुनी विराम;
सर्वे कुटुंब मळिने करिये प्रणाम. २
संतान बाळक अमे शरणे तमारे;
मातापिता शुं कहिये तमने वधारे;

जाणी समीप तमने प्रभु सर्व ठाम,
सर्वे कुटुंब मळिने करिये प्रणाम. ३
विश्राम सत्य प्रभु श्रीमने तमारो,
दुर्वृत्ति दूर करि सद्गुणने वधारो;
पूरो कृपानिधि तमे शुभ सर्व काम,
सर्वे कुटुंब मळिने करिये प्रणाम. ४
आशीष मंगळ सदा जगदीश देशो,
अर्चो अमारि परमेश्वर मानि लेशो;
आपो तमारूं प्रभु सात्त्विक पुण्य धाम,
सर्वे कुटुंब मळिने करिये प्रणाम. ५

शार्दूल विक्रीडित.

हे विश्वेश महाधिराज तमने पाये अ-
मे लागिये;
कौटुंबीजन मित्र सर्व मळिने पाप क्ष-
मा मागिये;

સત્કર્મો સુચવી કૃપાકરિ તને પાપૌઘ-
ને કાપજો, ૨
બંધુ પ્રીતિ દયા ક્ષમા ધૃતિગુણો સ્વામી
સદા આપજો. ૧

### ઇન્દ્રવજ્રા.

કૃપાઘના દેવ તને પ્રમાણું,
કરો સદા મંગળ સર્વ સારું;
ક્ષમા કરી પાપ તને કૃપાળ,
પ્રસન્ન રે'જો પ્રભુ સર્વ કાળ. ૧

### ભોજન સમયે પ્રાર્થના.

યોદેવોઽગ્નૌયોઽપ્સુયોવિશ્વંભુવનમા-
વિવેશ,યઓષધીષુયોવનસ્પતિષુતસ્મૈ
દેવાયનમોનમઃ

જે દેવનો પ્રકાશ અગ્નિમાં, જળમાં અને આખા વિશ્વમાં પ્રકાશિત તથા પ્રવિષ્ટ છે, જે ઔષધીમાં તથા વનસ્પતિમાં છે તે દેવને વારંવાર નમસ્કાર.

ૐ ભૂપતયેનમઃ ભુવનપતયેનમઃ ભૂતાનાંપતયેનમઃ

હે સકલ સૃષ્ટિના પાલક પરમેશ્વર ! હું તમને નમસ્કાર કરૂંછું.

તમે સર્વજ્ઞ, સર્વાંતર્યામી, પરાત્પર, નિત્ય, શુદ્ધ, સ્વપ્રકાશ છો. સર્વ પ્રજાને સર્વ પ્રકારે સુખ થવાને આ સૃષ્ટિમાં તમે યથાઘટિત યોજના તથા વ્યવસ્થા કરીછે. અમારા પોષણને માટે અન્નજલ આપેલુંછે. આ તમારો મહાન્ ઉપકાર છે. અમને નિત્ય ભોજનના પદાર્થ તમારી કૃપાથી મળેછે. આ વેળા આ તમારો આપેલો પ્રસાદ ગ્રહણ કરતાં પહેલાં

तमने शिरसा वंदन कारिये छिये.

माता जेम बालकने प्रीतिथी भोजन कराते छे, ते प्रमाणे विश्वपिता माता तमे अमो बालकनां सुखमां प्रेमथी कोळिया भरावानें अमारा समीपे पधारेलाछो. आ भावथी अमे तमारुं अंतराराधन करीने कृतज्ञता पूर्वक भोजन कारिये छिये.

ॐ तत्सत्परमात्मने नमः पितानोऽसि पितानोबोधि, नमस्तेऽस्तु विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव यद्भद्रंतन्नआसुव.

तुं अमारो पिता पालक छे, पितानी पेठे अमने तुं बोध कर, सर्वथा तने नमस्कार. हे देव जगत्ना उत्पन्न करनार ! (अमारां) सर्व पातक नाश कर, जे कल्याणकर होय ते अमारा समीपे मोकल.

## सायंकाळनी प्रार्थना.

ॐतत्सत् परमात्मने नमः

हे जगदीश्वर! आज तें मारा उपर अति करुणा करीछे तेनो उपकार मानीने तने वारंवार नमस्कार करूंछुं. तारी मंगळ छाया नीचे मारो दिवस सुखमां गयो; तारी कृपाथी पाछो विश्रांतिनो समय आव्योछे तेनुं अवलंबन करतां पहेलां शुद्ध भावे तारे शरणे आवुंछुं. हे कृपालु पिता! तुंज मारो त्राता, सुख तथा शान्तिनो दाता छे. तारा विना मुज दीनने बीजा कोइनो आधार आश्रय नथी. आज जे कांइ मने सुख मळ्युं ते सर्व तारा मंगल भावनो प्रकाश करेछे, तथा मारी [1]कृतज्ञता [2]उद्दीपन करेछे. तारा पितृस्नेहे मारी साथे र-

---

१ उपकार जाणवा. २ प्रकाश.

हीने मारा शरीरनी, मारा मननी रक्षा करीछे. सत्कार्यना धर्म साधनना जे जे सदुपाय ते तारा प्रसादथी मळ्याछे. प्रत्येक शुद्ध भाव जे मारा हृदयमां उदय थायछे, तेनो धन्यवाद करूंछुं अने जे जे सत्कर्म में यथाशक्ति कर्यांछे ते तने अर्पण करूंछुं.

सर्वज्ञ परमेश्वर ! आज जे जे पाप में कर्यांछे तथा तारी इच्छा प्रमाणे चालवामां भूलचूक थईछे ते तुं जाणेछे. अन्तरना अनुताप[1] सहित हुं तारी कृपा, तारी करूणा तथा प्रसादनी प्रार्थना करूंछुं; मारा आत्माने पवित्र कर. मने एवी दृढता आप के हुं फरीथी एवां पाप करूं नहि; तारा प्रसाद तथा तारी सहायता विना नीच वासनाओ तथा लालचोने छोडी देवानुं तथा दुर्विकारोने जीतवानुं मारामां कांइ पण सामर्थ्य

---

१ पश्चात्ताप (पस्तावो).

नथी; माटे अति नम्रताथी विनति करुंछुं के, हे दयामय! तुं मने विश्वास तथा धर्मबल आपीने मने कुविचार, दुर्वासनाथी दूर राख; मारुं मन पवित्र कर, मारा जीवननो दरएक दिवस तारी इच्छानुसारे चालवामां निर्गमन थाय एवी सुबुद्धि आपी मारुं संरक्षण कर.

भुजंगी.

परब्रह्म आनंददाता दयाळ,
कृपादृष्टि दीसे तमारी विशाळ;
प्रकाशी रह्या छो स्वसत्ताथि नाथ,
अमारी स्थिती छे तमारेज हाथ. १

प्रभू नाम कल्याणकारी तमारुं,
अती आदरे आ स्मरे हुं उचारुं;
नमो हे नमो हे नमो हे नमो हे,

उपासुं तने प्रेमथी हुं प्रभो हे. २
दिनाधिपती पश्चिमे अस्त पामे,
पशु पक्षियो स्वस्थले जै विरामे;
महासागरे नीर गंभीर गाजे,
सहु वस्तुमां शक्ति तारी विराजे. ३
सखी सांजवेला सुशोभीत भासे,
ग्रहो चंद्र तारा क्रमेथी प्रकासे;
चमत्कार जोई हुं चित्ते उल्लासुं,
अती नम्रताथी प्रभुने उपासुं. ४
तमे क्षेम कल्याण आनंददाता,
तमे सत्य छो सत्य छो सत्य त्राता;
कृपादृष्टिथी नाथ कीधी सहाय,
प्रभू ए तमारी प्रभुता जणाय. ५
थयो लीन आनंदमां सर्व आज,
तमे राखिजे भक्तनी नाथ लाज;

## रात्रिये शयन समयनी प्रार्थना.

हे सर्व कल्याणदाता परम देव ! तुं अपार करुणाथी मारुं संरक्षण करेछे, अने करीश एवो मने खरो विश्वास छे. रात्रिमां निद्रावस्थामां मारुं रक्षण करनार तुं छे. अज्ञान अथवा प्रकृति दोषथी जे पाप, जे अन्याय थया होय ते तुं कृपा करीने क्षमा कर. अकृत्रिम[1] अनुतापयुक्त थइने तारे शरणे आवीने नम्रभावे प्रार्थना करुंछुं के, तुं मारो परित्याग न करतां मारुं संरक्षण कर. निद्रामांथी ऊठुं त्यारे नवीन उद्यम साथे तारां प्रिय कार्य करुं, तारी भक्ति करुं एवुं मंगल विधान, हे मंगल निधान प्रभु ! तुं मने बतावजे. परंतु तारी इच्छाथी जो आजनी रात्रिज आ पृथिवीमां

१ ढोंग वगरना.

मारी शेष रात्रि होय, अने परलोके वास करवानो होय तो, तारा प्रसादथी मारा आत्माने अनंत उन्नति प्राप्त थइने तारा मंगल धामे तारा समीपे तारी मंगल छायामां मने सुखनिवास आपजे. आ शुभेच्छा तथा पवित्र वासना सहित तारे खोळे मारुं मस्तक मूकी विश्रांति लेउंछुं.

ॐ एकमेवाद्वितीयम् ॥

पाहि मां पाहि मां पाहि माम् ॥

हे ईश्वर! मारुं रक्षण करो, रक्षण करो, रक्षण करो.

ब्रह्मकृपा हि केवलम्.

## संपत्तिलाभ समये प्रार्थना.

हे सर्व कल्याणदाता कृपासिंधु परमेश्वर! तारी अपार करुणाथी तुं सुख सं-

पत्ति आपेछे तेना उपर अमर्याद मोह न
पामुं, संसारनी संपत्तिथी मारा चित्तने अ-
हंकार तथा तृष्णा गर्व न थाय, परंतु कृ-
तज्ञता तथा विनयथी मारुं मन पूर्ण रहे,
मारा मनमां सर्वदा एवी समज रहे के सं-
पत्ति तथा वैभव तें आप्या छे तेनो तारो ए-
वो अभिप्राय नथी के ते मने संसारमां अ-
मर्यादे आसक्त करे, एवुं विधान तुं कर.
सुख संपत्तिनी लालचो प्रबल थईने मारा
विवेकने दबावी नांखे नहि, अने संसारनी
सुख संपत्ति भोगवतां मारुं मन तारी सा-
थे संबद्ध[1] तथा संलग्न[2] रहे एवुं मने साम-
र्थ्य आप. हे करुणामय प्रभु! तारा प्र-
सादथी सर्व मने संपत्ति मळीछे, ते कदी
घाली जती रहे अने दुःख अने दारिद्र

1 बंधायेलुं. 2 जोडायेलुं.

आवे तो हुं तेथी न गभरातां ज्या जे अवस्थामां रहुं तेमां तारा उपर दृढ तथा अचळ विश्वास रहे, संसारनी असारताने हुं कादि न भूलुं एवी मति आप. मने सर्वदा एवुं स्मरण रहे के अहिंनुं धन, मान, सुख, संपत्ति सर्व क्षणभंगुर छे, मारी वासना सदा ते धन संपत्तिमां रहे के जेनो विनाश नथी; धर्म मारुं धन अने तारो प्रसाद ए मारी संपत्ति; हे नाथ! सर्वदा मारी साथे रहीने मारुं रक्षण कर.



## विपत्ति समयनी प्रार्थना.

हे दयामय प्रभु! संपत्ति तथा विपत्तिमां, सुखमां के दुःखमां सर्वकाल तुं मारी साथे छे; जगत्‌ना जीवोनुं तुंज रक्षण पालन करेछे. मारा उपर पडेली विपत्ति हे

दयालु पिता, तुं मने धैर्य अने संतोषनी
साथे सहन करवानुं शिखव. दुःखथी व्या-
कुळ न थाउं परंतु तें मारी सर्व अवस्था-
मां रक्षा करीछे तेनुं मने स्मरण रहे; अने
संसारना सुखनी असारता अने अनित्य-
ता समजाय एवुं मने ज्ञान आप. हे प्रभु!
हुं संतोष मानुंछुं के दुःख तथा विपत्तिना
समयमां पण तारो पितृस्नेह मारा उपर छे.
आ वेळा मने सहायता तथा सान्त्वता आ-
पनार कोइ रह्युं नथी; पण तुंज मारी रक्षा
करेछे; हे अनाथ नाथ दीनबंधु! तुं मने
एवुं बळ आप के हुं धैर्य राखी सर्व वि-
पत्ति दुःख सहन करी शकुं, दुःख दारि-
द्रना दबाणथी कर्तव्य साधनो उपर मने
अप्रीति न थाय, गमे तेवी दुःखावस्था
होय पण, हे दीन दयाळ! हुं तने हृदयमां स-

वेदा धारण करूं. असंतोष, निराशा, विक्षेप तथा मनना गभराटथी मारो बचाव कर. तारा अनंत प्रेमनो मने दृढ विश्वास आपीने मने शान्ति अने आनंद आप. हे प्रभु! तुं मारूं सर्वस्व छे, सर्व अवस्थामां तारा उपर विश्वास तथा प्रीति राखी मारां कर्तव्य साधनोमां हुं यत्नवान् थाउं एवी तुं कृपा कर.

हे करुणा सागर! तुं मने तारा संमुख राखी मारा मनने धैर्य आप तथा अजस्त्र कृपावारिथी मारा हृदय तापने शान्त कर.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

---

## पाप परित्राणार्थ प्रार्थना.

हे परमात्मन्! आ संसारनी अनेक प्रकारनी लालचो विषय वासना मारी आसपास वींटायलीछे. मारूं ज्ञान अल्प, मारी

मति मंद छे. हुं भयभीत पतितने तुंज अ-
भयदान आपनार तथा पावन करनार छे,
तुंज एक मारुं आश्रय स्थान छे; तारा उपर
मारो सर्व भरूंसो छे; तारोज मारे आधार छे.
पाप तापथी परितापित थइने बीजे क्यां
जइने मारा तापित प्राणने शीतल तथा
शान्त करूं? हे नाथ! हुं तारो छुं. तारीज
पासे मारा मननी वात प्रकाश करीने मागुंछुं
के पापथी मारा संतप्त आत्माने मुक्त कर.
तारी आगळ मारा अपराध थयाछे तेनो
शो विस्तार करूं? तारी आज्ञानी में घणी
वार अवगणना करी छे. तारी केटली
बधी प्रीति मारा उपर छे? तुं मारूं सर्वदा
लालन पालन करेछे, एवुं छतां हुं तने भू-
ली जाउंछुं. तुं पाप मार्ग परित्याग करवानुं
वारंवार सूचवीने मने तारा पुण्यपथे जवानी

प्रेरणा करेछे, ए तारी मंगल सूचनाओ जाण्या छतां में ते आज्ञाओ पाळी नथी. मारा उपर तारो अपार प्रेम छे परंतु ते प्रमाणे तारा उपर हुं प्रीतिभाव राखी शकतो नथी. हे मात पिता ! हुं दोषथी भरपूर छुं, अने ते दोषनो विचार करुंछुं त्यारे मारूं मन घणुं ग्लानि पामेछे. मने तारा संमुख आवतां लज्जा आवेछे. हे मंगलमय परमेश्वर ! मारो परित्याग न करतां मारूं परित्राण कर. अनुतापित हृदय तथा व्याकुल चित्तथी मारां पातकोनी क्षमा मागुंछुं. करूणा करी मारां पाप भस्मीभूत कर. नीच वासनाओ तथा मलीन कामनाओ मारा मनमां उत्पन्न न थाय, तारा उपर मारो प्रेम वधे, तारो मंगलपथ सूझे, तारी इच्छानुसारे वर्तवानो मारा मनमां उत्साह

वधे एवी पवित्र वासना मारा मनमा स्थापन
कर. आ संसारना सुख भोगनुं अशाश्वत-
पणुं मारा लक्षमां रहे एवी मने समजण
आपीने मारा चित्तने तारा संमुख लेई जा.
जे प्रवृत्ति, जे कामना ताराथी विच्छिन्न
करे एवी होय ते समूळथी मारा मनमांथी
उखेडी नांख, मारां बधां धर्म कार्य तथा
कर्तव्य साधनो तारा उपर विश्वास राखीने
करूं एवी मने सुबुद्धि आपी मने सहाय था.
हे करूणामय प्रभु! मने पापथी बचा-
वी मारा आत्माने पवित्र कर. तारा संमुख
आववाने योग्य थाउं एवां धर्म साधनो आपी
सुतवात्सल्य स्वभावे मारा सर्व अपराध
क्षमा करी मारामां धर्म वासना वधे, तारा
उपर मारो प्रेम चिरकाल रहे, तारी
उपासना भक्ति करवानो भाव मारामां दृढ

थाय, एवुं मने सामर्थ्य आप.

हे महाप्रभु! तने साष्टांग नमस्कार करी मारी प्रार्थना समाप्त करीने हुं मागुं छुं के मने पापथी मुक्त कर; मारा आत्मानो उद्धार थईने तारो प्रसाद, तारो आशीर्वाद मळे एवो पुण्य मार्ग बतावी मारा हृदयनुं सघळुं तिमिर नाश कर. तारा दिव्यज्ञाननो मंगलज्योति मारा हृदयमां प्रकाशित रहे ए मारी नम्र प्रार्थना कृपा करी स्वीकारी हे महामंगलमय परमकृपालु परमेश्वर! मने पावन करी तारी कृपा छाया नीचे सर्वकाल राखी मारुं संरक्षण कर.

ॐ एकमेवाद्वितीयम्

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्ति



## उपकार स्मरण प्रार्थना.

सर्व शक्तिमान परमकृपालु परमेश्वर सकल विश्वना पिता माता महा मंगलकारी परम पवित्र परमात्मा ! तुं सर्वस्थानमां स-र्वकालमां विराजमान तथा प्रकाशमान छे, तारी शक्ति अपार छे. तारूं औदार्य, वात्स-ल्य तथा करूणा अपरिमित छे. तुं सत्य शुद्ध मुक्त आनंदरूप सर्व जीवोनुं जीवन छे. आ पृथ्वी तथा बीजां अनेक ब्रह्मांड तुं धारण करी रह्यो छे. सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र, तारा, सर्वे नियम प्रमाणे चाले छे अने तारा मंगल गुणोनो तथा तारी अपार शक्ति तथा दयानो प्रकाश करे छे. तारा सर्वे नियम सुखकारी छे; जीवोना निर्वाह, पोषण, तथा सुखने अर्थे तें अन्नजळ, फळ, औषधि, वनस्पति इत्यादिक अनेक वस्तुओ उत्पन्न

करी छे. तारा महिमानुं, तारा गुणनुं, तारा मंगलभावनुं वर्णन करवाने हुं शक्तिमान् नथी. तुं सकल जगत्‌नो आधार सकल सुख तथा शान्तिनो भंडार छे. तें मारुं रक्षण कर्युं छे, मने अनेक प्रकारना संकटथी तथा भयथी बचाव्यो छे, मने घणुं सुख आप्युं छे अने आपेछे. कृपा करीने मारा रुडा मनोरथो तें पूरा कर्या छे अने करेछे. पाप कर्मथी वेगळो रहेवाने तुं मारा आत्माने वारंवार चेतवणी आपेछे. मने तथा मारा कुटुंबि तथा मारा मित्रने सुखी राखेछे. मारा आत्माना उद्धार तथा कल्याणने अर्थे सद्धर्म सूचवी तारो मंगळ मार्ग मने बतावेछे, मारी विपत्ति तथा दुःख निवारण करेछे, पाप तापथी संतप्त चित्ते तारी पासे आवुंछुं त्यारे तुं मारा मननु सांत्वन करीने

तारा करुणामृत वारिथी मारा आत्माने शान्ति आपी मने तारी मंगल तथा शीतल छाया नीचे राखे छे. आ तारो परमावधि उपकार मारा रंक अज्ञानी प्राणी उपर छे. हुं कृतज्ञता पूर्वक तने साष्टांग प्रणाम करी मागुं छुं के मने तारा उपकारनुं स्मरण रखावजे. हुं तने भूली न जाउं, तारा मंगल नियम पाळुं, काया वाचा मनवडे तारी भक्ति करूं, आ उत्तमदेह तें आप्यो छे ते तारां कार्यमां अर्पण करूं; मारी मनोवृत्ति पवित्र रहो; मारुं शिर तारे चरणे नमेलुं रहो; मारां नेत्र तारी सृष्टिनी सुंदर रचनानुं निरीक्षण करो; तारी शक्ति तथा उपकार मारा मनमां स्फुरायमान रहो; मारा कान तारा मंगल गुण तथा पवित्र चारित्रनुं श्रवण करो; मारी वाचा सदा तारी स्तु-

ति, तारां भजन गाई तारा धन्यवाद तथा जय शब्दोनुं उच्चारण करो; मारुं सर्व शरीर तथा संपत्ति परोपकार तथा धर्मनां कार्यमां उपयोगी थाओ; मारुं अंतःकरण तारा मंगलध्यान, उपासना अने प्रार्थनामां प्रवृत्त रहो; सदा तारी कृपाधारा मारा उपर वरसो; अने तारो वरदायी हस्त मारा उपर आच्छादित रहो;ए मारी आशा वाञ्छा तुं परिपूर्ण करी, हे मंगलमय महाधिराज ! मने मंगल आशीष देजे.

ॐ एषास्यपरमागतिरेषास्यपरमासंपदेषोऽस्यपरमोलोकएषोऽस्यपरमानन्दः एतस्यैवानन्दस्यान्यानिभूतानिमात्रामुपजीवन्ति

ए परमात्मा एज आ जीवनी परमगति
ए परमात्मा एज आ जीवनी परम संपत्ति,
ए परमात्मा ~~एज~~ तथा, जीवनो परमलोक,
ए परमात्मा, एज आ जीवनो परम आन-
न्द, ए आनंद बीजा सर्व प्राणियो अनु-
भवेछे.

स्तोत्र.

नमस्तेसतेतेजगत्कारणाय
नमस्तेचितेसर्वलोकाश्रयाय
नमो द्वैत तत्वाय मुक्ति प्रदाय
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥१॥
त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं
त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ
त्वमेकं परंनिश्चलं निर्विकल्पम् ॥२॥
भयानां भयं भीषणं भीषणानां

गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम्
महोच्चैः पदानां नियंतृ त्वमेकं
परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥३॥
वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो
वयं त्वां जगत्साक्षिरूपं नमामः
सदेकं निधानं निरालंबमीशं
भवांभोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥४॥

हे सत्यस्वरूप जगत्कारण प्रभु! हे चित्स्वरूप! सर्वलोकोने आश्रय आपनार, अद्वैत तत्त्व मुक्तिदाता, सर्व व्यापी शाश्वत ब्रह्म! अमे तने नमस्कार करियेछिये. तुंज अमारो एक शरण्य, तुंज एकलो वरेण्य, तुंज एकलो जगत्पालक, अने पोतानी मेले प्रकाशमानछे, तुंज एकलो जगत्कर्ता, पालनकरनार, तथा संहार करनार, तुंज एकलो परछे, निश्चल, निर्विकल्पछे, तुं

भयनोभय तथा भय करनारनो पण भय क
रनारछे, तुं प्राणिने गति आपनारछे पाव-
नो पण पावन तुं छे, घणा उंचा पदनो तुं
एकलो नियंताछे, परथी पर तुंछे, रक्षण
करनारनो पण रक्षण करनारछे.

अमे तारुं स्मरण करिये छिये, अमे
तारुं भजन करिये छिये. जगत्‌ना साक्षि
रूप अमे तने नमीये छिये, सत्स्वरूप एक
निधान निरालंब ईश्वर ! भवसागरमांथी
तारनार नौका ! सर्वना शरण्य ! अमे ता-
रा समीप आविये छिये.

---

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

# शुद्धिपत्र.

| पानुं. | पंक्ति. | अशुद्ध | शुद्ध. |
|---|---|---|---|
| ૧૦ | ૧૬ | थइने | थईने |
| ૩૯ | [illegible] | [illegible] | त्रिएति |
| ૪૦ | ૧૦ | सोहुम | सोहुम् |
| ૫૫ | ૧૦ | राखजे | राखजो |
| ૫૭ | ૬ | पिता चेत्ते | पित चित्ते |
| ૬૧ | ૧ | वाणी | वारि |
| ૬૫ | ૧૦ | स्तुनिश्वानि देवसवितदु रितानि | स्तु ॥ ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि. |
| ૭૦ | ૮ | भक्ति | भक्ती |
| ૭૪ | ૧૬ | ह | है |
| ૭૯ | ૧ | मनमा | मनमां |